Dr. Madan Paswan, History. | Lecture No. 23.
Class: B.A. Part-II (Hons.) Paper-III | Date: 21.09.2020

Topic: Consolidation of Turkish Rule - Razia. (1)

रजिया (1236-40 ई०): दिल्ली के तख्त पर रजिया के राज्यारोहण की अनेक विशेषताएँ थीं। सर्वप्रथम पहली बार दिल्ली सल्तनत के इतिहास में दिल्ली की जनता ने उत्तराधिकार के प्रश्न पर स्वयं निर्णय लिया। जब तक रजिया राजधानी में रही, उसको जनता का पूर्ण समर्थन मिला और कोई विद्रोह सफल नहीं हुआ। द्वितीय, वह जनता से यह समझौता कर सिंहासन पर बैठी थी कि जनता की अपेक्षाएँ संतुष्ट न करने पर उसे जनता पदच्युत कर देगी। तृतीय, उसके राज्यारोहण ने इल्तुतमिश का चयन न्याय संगत सिद्ध कर दिया। चतुर्थ, एक स्त्री को शासक के रूप में स्वीकार कर तुर्कों ने अपना पुरुषार्थ और संतुलन साबित कर दिया। पंचम, यह शासकीय विषयों में धर्माधिकारियों की असमर्थता की ओर संकेत करता है। षष्ठम, दिल्ली की सेना, अधिकारियों तथा जनता ने रजिया का राज्यारोहण किया था। प्रांतीय राज्यपालों ने, जो शक्तिशाली शासक वर्ग थे, ऐसा अनुभव किया कि उनकी उपेक्षा की गई है। अतः प्रारंभ से ही रजिया को उनके विरोध का सामना करना पड़ा।

रजिया का विरोध प्रसिद्ध तुर्क अमीरों ने किया जिनमें निजामुलमुल्क जुनैदी, मलिक अलाउद्दीन जानी, मलिक सैफुद्दीन कूची, मलिक ईजुद्दीन कबीर खां अयाज और मलिक ईजुद्दीन सलारी प्रमुख थे। उनका विद्रोह दबाने के लिए रजिया ने दिल्ली के बाहर यमुना नदी के किनारे अपना शिविर लगाया। ईजुद्दीन सलारी और ईजुद्दीन कबीर खां को गुप्त रूप से अपनी ओर मिला लिया। मलिक सैफुद्दीन कूची और उसके भाई फखरुद्दीन को पकड़कर मरवा दिया। जुनैदी सिरमूर की पहाड़ियों में भाग गया, जहाँ उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार रजिया ने कुशलतापूर्वक अपने विरोधियों को कुचल दिया। अभी तक प्रांतीय अधिकारी शासक की नियुक्ति में प्रमुख हाथ रखते थे, परन्तु इस विद्रोह के दमन से इस संवैधानिक परंपरा का अन्त हुआ। मिनहाज के अनुसार "लखनौती से देवल तक सारे मलिकों और अमीरों ने उसकी सत्ता स्वीकार कर ली।"

रजिया ने पर्दा प्रथा त्याग दिया और पुरुषों के समान 'कुबा' (कोट) और 'कुलाह' (टोपी) पहनकर जनता के सामने आने लगी। अब उसने शासन का पुनर्संगठन आरम्भ किया। उसने इक्ताओं में सेनाध्यक्षों और राज्यपालों की तथा शाही महल के अधिकारियों को नियुक्त किया। उसने इख्तियारुद्दीन ऐतगीन को 'अमीरे हाजिब' तथा मलिक जमालुद्दीन याकूत को 'अमीरे आखूर' (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त किया। तुर्क अधिकारी इस नियुक्ति से असन्तुष्ट हुए क्योंकि याकूत अबीसीनियाई था। ईजुद्दीन कबीर खाँ अयाज को रजिया ने लाहौर का इक्तादार नियुक्त किया। उसने विद्रोह किया पर असफल रहा और उसे इक्ता से हटा दिया गया।

कबीर खाँ के विद्रोह की असफलता और आत्मसमर्पण से स्पष्ट हो गया था कि राज्यपाल अकेले विद्रोह में सफल नहीं हो सकते थे, केवल ऐसा ही विद्रोह सफल हो सकता था जिसे दरबारी, तुर्क अधिकारी तथा प्रांतीय अधिकारी सामूहिक रूप से दिल्ली से बाहर करें। दिल्ली में नागरिकों के समर्थन के कारण रजिया का विरोध नहीं हो सकता था। ऐतगीन को रजिया ने बदायूं का 'इक्तादार' और फिर 'अमीरे हाजिब' बनाया था। इल्तुतमिश के अन्य अमीर इख्तियारुद्दीन अल्तूनिया को रजिया ने पहले बरन और फिर तबर हिन्द (भटिंडा) का इक्तादार नियुक्त किया था किन्तु दोनों ने रजिया के साथ विश्वासघात किया।

Continue....

Dr. M. Paswan – History.